नईदुनिया

डेनमार्क में क्रूरता : डाल्फिन और व्हेल समेत 700 मछलियों को मार डाला

मछलियों को चाकुओं से चीरकर जश्न मनाया, लाल हुआ समंदर

कोपेनहेगन

इंसानों की क्रूरता की ऐसी खौफनाक तस्वीर शायद ही आपने कभी देखी हो। मछलियों को पकड़कर जीवन यापन करना एक सामान्य बात है, लेकिन व्हेल और डाल्फिन जैसे बेहद संवेदनशील और बुद्धिमान जलीय जीवों को जिंदा ही चाकुओं से चीर डालना और फिर उन्हें तड़पते देखकर जश्न मनाना बेहद दिल दहलाने वाला है। डेनमार्क के अधिकार क्षेत्र में आने वाले फारो द्वीप पर लोग हर साल इस तरह का एक क्रूर उत्सव मनाते हैं, जिसे स्थानीय भाषा में द ग्रिंड कहा जाता है। इस पारंपरिक संहार को देखने के लिए बड़ी संख्या में स्थानीय महिलाएं और बच्चे भी समंदर के किनारे इकट्ठा होते हैं।

इस बार आयोजित हुए द ग्रिंड के दौरान लगभग 700 व्हेल और डाल्फिन को नावों के जरिए जबरन खींचकर किनारे की ओर लाया गया और फिर उथले समंदर में धारदार चाकुओं से उन्हें बेरहमी से फाड़ डाला गया। इन बेजुबान जीवों की इस नृशंस हत्या से इतना खून निकला कि समंदर का पूरा पानी लाल हो गया।

जानकारी के मुताबिक, यह खूनी आयोजन बीते 27 मई को किया गया था, जिसके बाद समंदर का पूरा तट सैकड़ों कटी-फटी मछलियों के शवों से पट गया। ग्लोबल मरीन कंजर्वेशन सी शेफर्ड की डायरेक्टर वैलेंटीना क्रास्ट ने इस पर कड़ा विरोध जताते हुए कहा कि उन्होंने यूरोपीय सरकारों से इस बर्बर कार्यक्रम पर तुरंत प्रतिबंध लगाने की मांग की है, लेकिन प्रशासन द्वारा इस दिशा में कोई सुनवाई नहीं की जा रही है। सरकारी आंकड़ों और रिपोर्ट के मुताबिक, इस बार द ग्रिंड वाले दिन कम से कम 402 पायलट व्हेल और लगभग 300 डाल्फिन को मौत के घाट उतार दिया गया।

पशु अधिकार संस्था पेटा की अध्यक्ष एलिसा एलेन ने इस पर गहरी संवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि ये जलीय जीव दर्द से कराहते हैं और छटपटाते हैं। व्हेल और डाल्फिन जैसी मछलियां इंसानों की तरह ही अपने पूरे परिवार के साथ समूह में रहती हैं, और इस उत्सव के नाम पर उनके पूरे कुनबे को ही निर्दयता से मिटा दिया जाता है।

चूंकि ये जीव बेहद संवेदनशील होते हैं, इसलिए इन्हें शारीरिक और मानसिक दर्द का अहसास भी बहुत ज्यादा होता है।एनीमल राइट एक्टिविस्ट्स का कहना है कि यह नृशंस कार्यक्रम करीब 1000 साल पुराने वाइकिंग युग की परंपरा है। हालांकि, फारो द्वीप एक स्वायत्त और स्वतंत्र क्षेत्र है, इसलिए यहां के लोग इसे अपनी प्राचीन संस्कृति और पहचान का अहम हिस्सा मानते हैं। आलोचकों और एक्टिविस्ट्स का तर्क है कि आज के आधुनिक और सभ्य युग में इस तरह की हिंसक परंपराओं की कोई जरूरत नहीं है।

न्यूज ब्रीफ

जर्मनी को टोमाहाक मिसाइल देने की योजना पर अमेरिका कर रहा पुनर्विचार

वाशिंगटन। अमेरिका और जर्मनी के बीच प्रस्तावित लंबी दूरी की टोमाहाक क्रूज मिसाइलों की आपूर्ति और तैनाती को लेकर अनिश्चितता बढ़ती जा रही है। रिपोर्टों के अनुसार, अमेरिकी रक्षा विभाग (पेंटागन) इस महत्वपूर्ण रक्षा समझौते की समीक्षा कर रहा है और आगे बढ़ाने के संभावित प्रभावों पर गहन विचार-विमर्श किया जा रहा है। इस घटनाक्रम ने यूरोप की सुरक्षा व्यवस्था और नाटो की भविष्य की रणनीति को लेकर नई चर्चाओं को जन्म दे दिया है। सूत्रों के मुताबिक, अमेरिकी सुरक्षा और खुफिया एजेंसियों के कुछ अधिकारियों का मानना है कि जर्मनी में लंबी दूरी की अमेरिकी मिसाइलों की तैनाती को रूस अपनी सुरक्षा के लिए प्रत्यक्ष खतरे के रूप में देख सकता है। ऐसी स्थिति में यूरोप में पहले से मौजूद तनाव और बढ़ सकता है तथा क्षेत्रीय सुरक्षा संतुलन बिगड़ सकता है। इसी कारण वाशिंगटन में इस समझौते के संभावित परिणामों पर गंभीरता से मंथन कर रहा है। यह प्रस्तावित समझौता पूर्व अमेरिकी प्रशासन के दौरान सहयोगी देशों के साथ व्यापक रणनीतिक विचार-विमर्श के बाद तैयार किया गया था। इसका उद्देश्य यूरोप की रक्षा क्षमताओं को मजबूत करना और नाटो की सामूहिक सुरक्षा व्यवस्था को और प्रभावी बनाना था। यदि अमेरिका इस योजना को स्थगित करता है या इसमें बदलाव करता है, तब इससे उसकी विदेश और सुरक्षा नीति में एक महत्वपूर्ण बदलाव माना जा सकता है। जर्मनी लंबे समय से अपनी सैन्य क्षमताओं के आधुनिकीकरण और यूरोप की सुरक्षा संरचना को मजबूत करने की दिशा में प्रयास करता रहा है। रूस-यूक्रेन संघर्ष के बाद बर्लिन ने रक्षा खर्च बढ़ाने और आधुनिक हथियार प्रणालियों के अधिग्रहण पर विशेष जोर दिया है।

राष्ट्रपति ट्रंप के प्रमुख एआई सलाहकार श्रीराम कृष्णन ने दिया इस्तीफा, एआई एक्शन प्लान बनाने में निभाई थी अहम भूमिका

वाशिंगटन। अमेरिका में व्हाइट हाउस के आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस (एआई) सलाहकार श्रीराम कृष्णन ने अपने पद से हटने का ऐलान कर दिया है। उन्होंने स्पष्ट किया है कि वह केवल आगामी जून तक ही इस पद पर अपनी सेवाएं दे सकेंगे। कृष्णन ने अपने 18 महीने के संक्षिप्त लेकिन बेहद प्रभावी कार्यकाल के दौरान अमेरिका का पूरा एआई एक्शन प्लान तैयार करने में केंद्रीय भूमिका निभाई। इसके साथ ही आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के सुरक्षित और जिम्मेदारी पूर्ण उपयोग के लिए एक मजबूत नेशनल फ्रेमवर्क विकसित करने का श्रेय भी उन्हें ही जाता है। अपने इस्तीफे की घोषणा करते हुए श्रीराम कृष्णन ने सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर लिखा कि एक छोटे से ब्रेक के बाद वह एक बार फिर अमेरिका और उसके सहयोगी देशों के सामने एआई की वजह से पैदा हुई चुनौतियों को कम करने के मिशन पर जुटेंगे। उन्होंने वर्तमान परिदृश्य का जिक्र करते हुए कहा कि अभी एआई से जुड़े कई जटिल और गंभीर मुद्दे हमारे सामने हैं, जिनमें डेटा सेंटरों का तेजी से होता विस्तार और उससे होने वाली भारी ऊर्जा की खपत शामिल है। इन चुनौतियों से निपटने के लिए वैश्विक स्तर पर सबको मिलकर काम करने की सख्त जरूरत है।

सिंधु जल संधि निलंबन से पाक के बड़े क्षेत्र में मंडरा रहा पानी की कमी का खतरा

इस्लामाबाद। भारत के सिंधु जल संधि को निलंबित करने से पाकिस्तान के बड़े क्षेत्र में पानी की कमी होने का खतरा मंडरा रहा है। दूसरी ओर पाकिस्तान में जल आपूर्ति से जुड़ी परियोजनाएं भी रुक सकती हैं। फंड की कमी के चलते पाकिस्तान में जल संसाधन से जुड़े प्रोजेक्ट में रुकावट आने का खतरा है। इसके चलते गर्मी में आम लोगों की परेशानी बढ़ती जा रही है। एक रिपोर्ट के मुताबिक पाकिस्तान सरकार ने जल क्षेत्र में 969 अरब रुपए की जरूरत होने के बावजूद सिर्फ 179 अरब रुपए के एलोकेशन का प्रस्ताव दिया है। ऐसे में खासतौर से अगले फाइनेंशियल ईयर में वाटर सेक्टर के डेवलपमेंट को फंड की भारी कमी का सामना करना पड़ सकता है, जो परेशानी का सबब बनेगा। पाकिस्तान की मिनिस्ट्री आफ वाटर रिसोर्स ने चल रही और प्लान की गई डेवलपमेंट स्कीम के लिए 969 अरब रुपए की जरूरत का अनुमान लगाया है। आने वाले डेवलपमेंट बजट में 41 चल रहे प्रोजेक्ट शामिल हैं, जिसमें एक नई स्कीम जोड़ी गई है। सरकार ने सिर्फ 179 अरब रुपए देने के प्रस्ताव ने पूरी स्कीम को मुश्किल में डाल दिया है। पाक सरकार ने सिंधु नदी पर टेलीमेट्री सिस्टम लगाने के लिए 5.76 अरब रुपए का प्रस्ताव दिया है।

इजराइल के हवाई हमले में लेबनान के सैन्य प्रमुख ब्रिगेडियर जनरल रुडोल्फ हैकल समेत 12 की मौत

बेरूत (लेबनान)

अमेरिका की मध्यस्थता से इजराइल और लेबनान के बीच वाशिंगटन में घोषित सशर्त सैन्य विराम (युद्ध विराम, सीजफायर) दिखावा साबित हुआ। इजराइल के ताजा हमले में 12 लोगों की मौत हो गई। मृतकों में लेबनान के सैन्य प्रमुख भी शामिल हैं। अधिकारियों ने पुष्टि की कि सैन्य प्रमुख , एक कैप्टन और एक सैनिक की मौत हो गई। इनकी मौत खारदली-नबातीह रोड पर यात्रा के दौरान हुई। सैन्य प्रमुख को पाकिस्तान पहुंचना था। पाकिस्तान पहुंचने से पहले ही उनकी जान ले ली गई। लेबनान के राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री ने देश के सैन्य प्रमुख (सशस्त्र बलों के कमांडर-इन-चीफ) ब्रिगेडियर जनरल रुडोल्फ हैकल को निशाना बनाने को देश की संप्रभुता पर हमला करार दिया है। इस हमले की कई देशों ने भी कठोर निंदा की है।

इजराइल ने छह जून को लेबनान पर कहर बरपाया। लेबनान की सेना ने पुष्टि की है कि इजराइल के हवाई हमले में खारदली-नबातिह रोड पर अभेद्य माना जाने वाला सैन्य वाहन नष्ट हो गया। इसमें सवार सेना के सर्वोच्च कमांडर , कैप्टन और एक सैनिक मारे गए। इजराइली डिफेंस फोर्सेज (आईडीएफ) ने कहा कि यह हमला सक्रिय युद्ध क्षेत्र में हुआ। इस क्षेत्र में आवाजाही के लिए इजराइली सेना के साथ तालमेल जरूरी है। आईडीएफ ने कहा इस घटना की जांच की जा रही है।

लेबनानी सेना ने कहा, इजराइल की जानबूझकर और बार-बार की जा रही क्रूरता और आक्रामकता का मकसद किसी समाधान तक पहुंचने की सभी कोशिशों को नाकाम करना है। लेबनान के राष्ट्रपति जोसेफ आउन ने इस हमले की निंदा करते हुए इसे लेबनान की संप्रभुता और अंतरराष्ट्रीय कानूनों व नियमों का खुला उल्लंघन बताया। प्रधानमंत्री नवाफ सलाम ने इसे एक घिनौना अपराध और लेबनान तथा सभी लेबनानी लोगों पर हमला करार दिया। लेबनान के प्रधानमंत्री सलाम ने बयान में ब्रिगेडियर जनरल वसम सबरा, कैप्टन एली खौरी और सैनिक हुसैन घोजल के परिवारों और सहयोगियों के साथ-साथ लेबनानी सेना के प्रति भी संवेदना व्यक्त की।

लेबनान की सेना ने बताया कि उसके सर्वोच्च कमांडर रुडोल्फ हैकल अपने पाकिस्तानी समकक्ष फील्ड मार्शल आसिम मुनीर के साथ बातचीत के लिए पाकिस्तान जा रहे थे। लेबनान में सक्रिय ईरान समर्थक सशस्त्र आतंकवादी समूह हिजबुल्लाह ने हमले को घिनौना अपराध बताया। साथ ही लेबनान सरकार पर आरोप लगाया कि उसने वाशिंगटन में दुश्मन की मांगों के सामने पूरी तरह घुटने टेककर देश को खूनखराबे के बीच धकेल दिया है। ईरान के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता इस्माइल बघाई ने कहा कि इन हत्याओं से यह बात फिर साबित होती है कि इजराइल लेबनान के हर हिस्से पर अपना दावा कर रहा है । बघाई ने कहा कि यह लेबनान उसकी सेना और उसकी संप्रभुता के खिलाफ एक घिनौना अपराध है। साफ है कि इजराइल लेबनान में सुरक्षा, स्थिरता या समृद्धि नहीं चाहता। सऊदी अरब ने इस हमले और दोस्त देश लेबनान गणराज्य के खिलाफ इजराइल की लगातार आक्रामकता की निंदा की है। जार्डन ने कहा कि यह दोस्त देश लेबनान की संप्रभुता, सुरक्षा और स्थिरता का खुला उल्लंघन और अंतरराष्ट्रीय कानून का साफ उल्लंघन है। कतर ने इसे खतरनाक तनाव और लेबनान की संप्रभुता का खुला उल्लंघन बताया है। कतर के विदेश मंत्रालय ने अंतरराष्ट्रीय समुदाय से अपील की कि वे दखल दें। वक्त आ गया है कि इजराइल को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के प्रस्ताव 1701 को पूरी तरह से लागू करने के लिए मजबूर किया जाए। दक्षिणी लेबनान में संयुक्त राष्ट्र शांति सेना ने कहा कि ऐसे हमले लेबनान की संप्रभुता, क्षेत्रीय अखंडता और सुरक्षा परिषद के प्रस्ताव 1701 का गंभीर उल्लंघन हैं। संयुक्त राष्ट्र के इसी प्रस्ताव ने 2006 में इजराइल और हिजबुल्लाह के बीच युद्ध खत्म कराया था। इसके अलावा लेबनान की सरकारी नेशनल न्यूज़ एजेंसी (एनएनए) ने बताया कि सिडोन जिले के सकसाकिया गांव में इजराइली हवाई हमले में छह लोगों की मौत हो गई और चार अन्य घायल हो गए। नबातीह जिले के देर अल-ज़हरानी में एक कार को निशाना बनाकर किए गए इजराइली ड्रोन हमले में एक और व्यक्ति की मौत हो गई। इजराइल की सेना ने कहा कि उसने पिछले दो दिन में दक्षिणी लेबनान में हिजबुल्लाह के लगभग 150 ठिकानों पर हमला किया है। इनमें शस्त्र भंडारण गृह, कमांड सेंटर, राकेट लान्चर और इंफ्रास्ट्रक्चर साइट्स शामिल हैं। इजराइली सेना ने शनिवार देररात कहा कि उसके दो सैनिक दक्षिणी लेबनान में मारे गए हैं। उधर, हिजबुल्लाह ने बिंट जेबिल इलाके में इजराइल की चौकी को ड्रोन हमले में उड़ाने का दावा किया है। महत्वपूर्ण यह है कि संघर्ष विराम का सिलसिला 17 अप्रैल से चल रहा है। अब तक इसका कभी पूरी तरह से पालन नहीं किया गया। हिजबुल्लाह और इजराइल ने अकसर एक-दूसरे पर उल्लंघन के आरोप लगाए हैं। दो-चार दिन पहले वाशिंगटन में लेबनान और इजराइली दूतों ने एक सशर्त सैन्य विराम की घोषणा की थी। हिजबुल्लाह के नेता नईम कासिम ने कहा था कि वह इस सैन्य विराम को नहीं मानेंगे। दक्षिणी लेबनान से इजराइल की वापसी पर ही कोई समझौता मान्य हो सकता है।

अमेरिकी सेना का ईरान के रडार ठिकानों पर हमला, कुवैत बहरीन में मिसाइल अलर्ट

वाशिंगटन/तेहरान

अमेरिका और ईरान के बीच तनाव एक बार फिर बढ़ गया है। अमेरिकी सेना ने ईरान के तटीय क्षेत्र में स्थित कुछ रडार और निगरानी ठिकानों को निशाना बनाकर कार्रवाई की, जबकि ईरान ने इसे युद्धविराम का उल्लंघन बताते हुए कड़ी प्रतिक्रिया दी है।

अमेरिकी अधिकारियों के अनुसार हार्मुज जलडमरूमध्य के आसपास समुद्री गतिविधियों पर नजर रखी जा रही थी। अमेरिकी सेना का दावा है कि क्षेत्र में सक्रिय कुछ ड्रोन अंतरराष्ट्रीय नौवहन के लिए संभावित खतरा पैदा कर रहे थे। इसके बाद अमेरिकी बलों ने ईरान के गोरुक क्षेत्र और केशम द्वीप के पास स्थित निगरानी ढांचे पर लक्षित हमले किए। ये दोनों स्थान हार्मुज जलडमरूमध्य के समीप स्थित हैं और सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण माने जाते हैं।

दूसरी ओर, ईरान के विदेश मंत्रालय ने अमेरिकी कार्रवाई की निंदा करते हुए इसे क्षेत्र में तनाव बढ़ाने वाला कदम बताया। मंत्रालय का कहना है कि इस तरह की सैन्य गतिविधियां पहले से मौजूद संघर्षविराम व्यवस्था की भावना के विपरीत हैं और इससे क्षेत्रीय स्थिरता प्रभावित हो सकती है।

इस बीच, ईरान की इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कार्प्स (आईआरजीसी) ने दावा किया है कि उसने अमेरिकी हमलों के जवाब में खाड़ी क्षेत्र में अमेरिकी सैन्य ठिकानों को निशाना बनाया। संगठन ने यह भी कहा कि हार्मुज क्षेत्र में कुछ जहाजों के खिलाफ कार्रवाई की गई, हालांकि इन दावों की स्वतंत्र पुष्टि नहीं हो सकी है।

कुवैत की सेना ने बताया कि उसके वायु रक्षा तंत्र ने देश के हवाई क्षेत्र की ओर बढ़ रही कई बैलिस्टिक मिसाइलों को निष्क्रिय कर दिया। सैन्य अधिकारियों के अनुसार, मिसाइलों के अवशेष कुछ रिहायशी इलाकों में गिरे, जिससे संपत्ति को नुकसान पहुंचा, लेकिन किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है।

उधर, बहरीन में सुरक्षा एजेंसियों ने एहतियात के तौर पर चेतावनी सायरन जारी किए और नागरिकों से सुरक्षित स्थानों पर जाने की अपील की। क्षेत्रीय देशों ने स्थिति पर नजर बनाए रखी है और तनाव कम करने के लिए कूटनीतिक प्रयासों की आवश्यकता पर जोर दिया है।

24 अरब डालर की फ्रीज संपत्ति जारी करने पर अड़ा तेहरान

तेहरान। अमेरिका और ईरान के बीच लंबे समय से जारी युद्ध और कूटनीतिक गतिरोध को खत्म करने के लिए चल रही बातचीत अब सिर्फ एक बड़ी शर्त पर आकर अटक गई है। ईरान के सुप्रीम लीडर अयातुल्ला मोजतबा खामेनेई के सैन्य सलाहकार मोहसिन रेजाई ने दावा किया है कि दोनों देशों के बीच वार्ता वर्तमान में डेडलाक यानी गंभीर गतिरोध में फंस गई है। उन्होंने स्पष्ट किया कि इस बातचीत को अब आगे बढ़ाने और गतिरोध को तोड़ने की पूरी जिम्मेदारी अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप पर निर्भर करती है। ईरान के अनुसार, किसी भी संभावित शांति समझौते को अमलीजामा पहनाने के लिए सबसे बड़ी और अनिवार्य शर्त विभिन्न देशों में वर्षों से फ्रीज (जब्त) पड़ी 24 अरब डालर की ईरानी संपत्तियों को तत्काल मुक्त करना है। सैन्य सलाहकार ने जोर देकर कहा कि अब गेंद ट्रंप के पाले में है और अगर वे वास्तव में समझौता चाहते हैं तो यह भारी-भरकम रकम जारी करना उनके लिए भरोसे की पहली अग्निपरीक्षा होगी, क्योंकि यह पैसा ईरान का है, अमेरिका का नहीं। इस 24 अरब डालर के वित्तीय विवाद की बात करें तो ईरान की मांग है कि एक अंतरिम समझौते पर हस्ताक्षर होते ही पहली किस्त के रूप में 12 अरब डालर तुरंत जारी किए जाएं और शेष 12 अरब डालर बाद में दिए जाएं।

बच्चों को अभिनय का पेशा समझाना आसान नहीं होता : डेनियल

लॉस एंजेलिस

हॉलीवुड अभिनेता डेनियल रेडक्लिफ भले ही करोड़ों प्रशंसकों के बीच एक बड़े सितारे हों, लेकिन अपने घर में उनकी पहचान सबसे पहले एक पिता की है। अभिनेता ने हाल ही में अपने छोटे बेटे से जुड़ा एक दिलचस्प और मजेदार अनुभव साझा किया, जिसमें उनके बेटे की मासूम प्रतिक्रिया ने सभी का ध्यान खींच लिया। डेनियल रेडक्लिफ ने बताया कि एक दिन वह अपनी साथी एरिन डार्के के साथ घर पर विंटर ओलंपिक देख रहे थे। कार्यक्रम के दौरान वह कुछ समय के लिए कमरे से बाहर चले गए। संयोग से उसी समय टेलीविजन पर उनका एक विज्ञापन प्रसारित होने लगा।

उनके बेटे ने जैसे ही स्क्रीन पर अपने पिता को देखा, वह पूरी तरह उलझन में पड़ गया। उसके लिए यह समझना मुश्किल था कि जो व्यक्ति अभी कुछ क्षण पहले कमरे से बाहर गया है, वह अचानक टीवी पर कैसे दिखाई देने लगा। अभिनेता ने बताया कि उनके बेटे ने हैरानी भरे अंदाज में 'पापा कहा और फिर कमरे में इधर-उधर देखने लगा। उसे लगा कि शायद उसके पिता किसी तरह टीवी के अंदर पहुंच गए हैं।

कुछ देर बाद उसने यह भी पूछा कि क्या पापा कहीं चले गए हैं। डेनियल ने कहा कि यह पल उनके लिए बेहद खास और यादगार था, क्योंकि इससे उन्हें महसूस हुआ कि उनका बेटा अभी पूरी तरह सामान्य बचपन जी रहा है और उसे अपने पिता की लोकप्रियता या स्टारडम के बारे में कोई जानकारी नहीं है। उन्होंने मजाकिया अंदाज में कहा कि बच्चों को अभिनय का पेशा समझाना आसान नहीं होता। उनके अनुसार यदि कोई व्यक्ति डॉक्टर, पुलिसकर्मी या अग्निशमन कर्मी हो तो बच्चे आसानी से समझ सकते हैं कि वह क्या काम करता है, लेकिन अभिनेता का काम छोटे बच्चों को समझाना काफी चुनौतीपूर्ण होता है। कई बार माता-पिता खुद भी सोचते रह जाते हैं कि अभिनय की दुनिया को बच्चों के सामने किस तरह सरल भाषा में समझाया जाए।

डेनियल ने बताया कि वह अपने बेटे को समझाने की कोशिश करते हैं कि जैसे किताबों में कहानियां होती हैं, वैसे ही अभिनेता उन कहानियों को पर्दे पर जीवंत बनाते हैं। हालांकि उनका बेटा अभी इतना छोटा है कि इन बातों को पूरी तरह समझ नहीं पाता। अभिनेता का कहना है कि फिलहाल उनका बेटा उनकी पेशेवर दुनिया से काफी दूर है और वह चाहते हैं कि कुछ समय तक ऐसा ही बना रहे, ताकि वह सामान्य और सहज बचपन का आनंद ले सके। गौरतलब है कि डेनियल रेडक्लिफ और एरिन डार्के ने वर्ष 2023 में अपने बेटे का स्वागत किया था। दोनों अपने निजी जीवन को सार्वजनिक नजरों से दूर रखना पसंद करते हैं और अब तक उन्होंने अपने बेटे का नाम भी सार्वजनिक नहीं किया है।

जन्मदर में रिकार्ड गिरावट ने बढ़ाई जापान की चिंता

टोक्यो

वर्ष 2025 के जनसंख्या आंकड़ों के अनुसार जापान की कुल आबादी घटकर लगभग 12 करोड़ 30 लाख रह गई है, जो वर्ष 2020 की तुलना में करीब 30 लाख कम है। हाल ही में जारी आंकड़ों ने सरकार और नीति निर्माताओं की चिंताओं को और बढ़ा दिया है।

जारी आंकडों के अनुसार, पिछले पांच वर्षों में जनसंख्या में लगभग 2.5 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई है, जिसे 1920 में जनगणना शुरू होने के बाद सबसे बड़ी कमी माना जा रहा है। विशेषज्ञों के अनुसार जापान में लगातार घटती जन्मदर और बढ़ती मृत्यु दर इस संकट के प्रमुख कारण हैं। देश में बच्चों की संख्या ऐतिहासिक रूप से सबसे निचले स्तर पर पहुंच गई है।

मई 2025 के आंकड़ों के मुताबिक कुल आबादी में बच्चों की हिस्सेदारी केवल 10.8 प्रतिशत रह गई है, जो 1950 के बाद का सबसे कम स्तर है। यह स्थिति भविष्य में श्रमबल, अर्थव्यवस्था और सामाजिक सुरक्षा व्यवस्था के लिए बड़ी चुनौती बन सकती है। जापान सरकार ने इस समस्या से निपटने के लिए कई योजनाएं लागू की हैं। बच्चों के पालन-पोषण में सहायता देने, परिवारों को आर्थिक प्रोत्साहन उपलब्ध कराने और युवाओं को विवाह एवं परिवार बढ़ाने के लिए प्रेरित करने जैसे कदम उठाए गए हैं। इसके बावजूद अपेक्षित परिणाम सामने नहीं आए हैं। बड़ी संख्या में युवा महानगरों की ओर आकर्षित हो रहे हैं और पारिवारिक जिम्मेदारियों से दूरी बना रहे हैं। इसका प्रभाव यह है कि राजधानी टोक्यो की आबादी में 1.4 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है, जबकि देश के अधिकांश अन्य क्षेत्रों में जनसंख्या लगातार घट रही है।

मुख्य कैबिनेट सचिव माइनोरू किहारा ने स्वीकार किया है कि जनसंख्या में गिरावट की रफ्तार उम्मीद से कहीं अधिक तेज है। उन्होंने कहा कि सरकार इस चुनौती से निपटने के लिए नए और प्रभावी उपायों पर काम कर रही है। वहीं, विश्व बैंक के आंकड़ों के अनुसार मोनाको के बाद जापान दुनिया का दूसरा ऐसा देश है जहां बुजुर्ग आबादी का अनुपात सबसे अधिक है। इधर विदेशी नागरिकों की संख्या बढ़कर 32 लाख से अधिक हो गई है, जो वर्ष 2020 में 27 लाख के आसपास थी। कई विशेषज्ञों का मानना है कि नियंत्रित आव्रजन नीति जापान की जनसंख्या समस्या का एक प्रभावी समाधान हो सकती है। हालांकि राजनीतिक स्तर पर इस मुद्दे को लेकर मतभेद बने हुए हैं। सरकार ने वर्ष 2030 तक की अवधि को जनसंख्या गिरावट की दिशा बदलने के लिए निर्णायक समय माना है।